समाज की शक्तिमत्ता और बुद्धिमत्ता मीडिया की

◆प्रो. डॉ. राम आह्लाद चौधरी
प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

हिंदी समाज और हिंदी मीडिया का संघर्ष ऐतिहासिक है। इस ऐतिहासिक संघर्ष का रणक्षेत्र कोलकाता है। आजादी की लड़ाई से पहले से हिंदी समाज ने संघर्ष के जरिये जिस तरह पूरे भारत में अपने लिए स्थान बनाया है, ठीक उसी तरह इस कोलकाता में भी हिंदी समाज ने अपने लिए स्थान सुरक्षित किया है। कोलकाता संघर्ष की धरती है, कोलकाता नये विचारों की उड़ान का आकाश है, कोलकाता वह सब कुछ है, जिसे लेकर हिंदी समाज और हिंदी मीडिया आगे बढ़ने की प्रक्रिया जारी रखे हुए है। हिंदी समाज और हिंदी मीडिया को एक प्रक्रिया के रूप में देखना उचित है; इसलिए कि कोई समाज तभी पल्लवित और पुष्पित होता है, जब उसके पास मीडिया हो, और कोई मीडिया अपनी सामाजिक भूमिका तभी अदा कर पाती है, जब उसके पास एक संघर्षशील समाज हो, जो निरंतर अग्रगति की राह पर आगे बढ़ता रहे। इस दृष्टिकोण से जब कोलकाता के हिंदी समाज और हिंदी मीडिया पर विचार किया जाता है, तब स्पष्ट हो जाता है कि हिंदी का संघर्ष न केवल कोलकाता, न केवल बंगाल, न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में इस संघर्ष के तेजस्वी रूप का दर्शन होने लगता है।

इसके तेजस्वी इतिहास पर आलोकपात्र करते हुए नेताजी ने २० दिसम्बर, १९२८ को राष्ट्रभाषा सम्मेलन की स्वागत समिति की तरफ से गांधी जी की उपस्थिति में स्वागत भाषण देते हुए कहा था – "आजकल के हिंदी गद्य का जन्म कलकत्ते में ही हुआ था। लल्लू लालजी ने अपना प्रेमसागर इसी नगर में बैठकर बनाया और सदल मिश्र ने 'चन्द्रावली' की रचना यहीं पर की और यही दोनों सज्जन हिंदी गद्य के आचार्य माने जाते हैं। हिंदी का सबसे पहला प्रेस कलकत्ते में ही बना और सबसे पहला अखबार 'बिहार बन्धु' यहीं से निकला। इसलिए हिंदी सम्पादन कला के इतिहास में कलकत्ते का स्थान बहुत ऊँचा है। सबसे पहले कलकत्ता विश्वविद्यालय ने ही हिंदी को एम. ए. में स्थान दिया।" कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति सर आशुतोष मुखर्जी ने सन् १९१९ में पहली बार हिंदी में स्नातकोत्तर की पढ़ाई शुरू कराने में सफलता हासिल की। गुजराती कविश्री नर्मद ने हिंदी को प्रचारित-प्रसारित करने का प्रयास सन् १८३३ से लेकर सन् १८८६ तक किया; उन्होंने सबसे पहले हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की पहल शुरू की। राष्ट्रभाषा बनाने की मांग को सामने रखते हुए हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ। इस वजह से हिंदी समाज का विकास हुआ तथा हिंदी मीडिया की सामाजिक भूमिका सामने आयी, हालांकि रोजी-रोटी के सवाल ही प्रमुख रहे उल्लेखनीय यह भी है कि सन् १७९६ में कोलकाता से 'ग्रामर ऑफ हिन्दुस्तानी लैंग्वेज' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। यह पुस्तक देवनागरी लिपि की पहली पुस्तक है, जिसे जॉन गिल क्रिस्ट ने प्रकाशित कराया। इसी कोलकाता से ३० मई १८२६ को 'उदन्त मार्तण्ड' प्रकाशित हुआ जिसके संपादक पं. जुगलकिशोर शुक्ल थे। इसी ३० मई को भारत में प्रत्येक साल पत्रकारिता दिवस मनाया जाता है जिस तरह से ब्रितानी भारत में हिंदी समाज और हिंदी मीडिया अपने अधिकारों को

Scanned by CamScanner

सुरक्षित रखने तथा अधिकारों को अर्जित करने के लिए संघर्षरत थे, ठीक उसी तरह स्वतंत्र भारत को एक सुन्दर भारत बनाने के लिए संघर्षरत है।

उन दोनों की संघर्षगाथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विराज करती है। तख्त और ताज के पीछे समाज और मीडिया नहीं भागते हैं। उन दोनों के मानस में जनता की मांग प्रमुख होती है। सच और नैतिकता की राह पर जब समाज और मीडिया आगे बढ़ते हैं, तभी उन दोनों के कायाकल्प होते हैं। आजादी के बाद खासकर सन् १९५० के बाद मोहभंग की प्रक्रिया तेज होने लगी। हिंदी मीडिया ने उन तमाम कमजोरियों को रेखांकित करते हुए श्रम की भूमिका को स्थापित करने का बिगुल फूंका। इस बिगुल की आवाज आकाश में गूंजने लगी। ठीक इसके २५ साल बाद आपातकाल का काल आता है। आपातकाल के पहले से कोलकाता में वाक् स्वाधीनता यानी स्वतंत्र अभिव्यति का संघर्ष आरंभ हुआ। आपातकाल के बाद यह आंदोलन और तेज हुआ। इसके ठीक पच्चीस साल बाद यानी वैश्वीकरण युग में उसके दुष्परिणामों के विरुद्ध हिंदी मीडिया का तेवर और लाल हुआ। हिंदी मीडिया ने नवउदारीकरण के दुष्परिणामों के विरुद्ध लगातार आंदोलन तेज किये हालांकि उन आंदोलनों की शुरुआती दौर को दुरूस्त करने की भूमिका हिंदी मीडिया ने निभाई। डिजिटल युग हो या उत्तर उत्तर-आधुनिकता का युग हो, हर क्षण हिंदी मीडिया ने सांस्कृतिक समन्वय को स्थापित किया है। जब डिजिटल युग भारत में आरंभ हुआ, तब उसके दुष्परिणामों की तरफ ध्यान आकर्षित करने में हिंदी मीडिया अन्य मीडिया से किसी कीमत पर पीछे नहीं रहा, क्योंकि इसका नैतिक स्वर अत्यंत स्पष्ट है।

हिंदी मीडिया की दृष्टि बिल्कुल साफ है, मेहनतकशों-वंचितों-उत्पीड़ितों को एकत्रित करने में इसकी भूमिका सदा अमर रही है। हिंदी मीडिया न कारपोरेट की दलाली करता है और न शासन प्रशासन का पिछलग्गू है। इसी गुण के चलते हिंदी मीडिया का प्रचार-प्रसार बढ़ता है। जहां पूरी दुनिया में मीडिया के समक्ष पाठकों की संख्या में गिरावट एक प्रमुख समस्या है, वही हिंदी मीडिया इस समस्या से बरी है, क्योंकि इस 'उत्तर-सत्य' के युग की सारी खामियों से जूझने की ताकत हिंदी मीडिया रखता है। इसी ताकत के बल पर इसने हिंदी समाज को मेहनती और विश्वासी बनाया है। हिंदी मीडिया ने हिंदी समाज को एकत्रित किया है तथा उसे संघर्ष की राह पर चलने की शिक्षा देते हुए यह बतलाने का प्रयास किया है कि श्रम ही सृजन का उत्स है। इस उत्स को पहचानना तथा उसके वैशिष्ट्य को ग्रहणशील बनाने के सिलसिले में हिंदी मीडिया ने लम्बा सफर तय किया है। इस सफर की तरफ ध्यान देने से यह स्पष्ट होगा कि हिंदी मीडिया ने हिंदी समाज को अपनी ऊर्जा से ऊर्जस्वित किया है तथा हिंदी समाज ने अपने तेज से हिंदी मीडिया को तेजस्वी बनाया है। इंटरनेट पर हिंदी के उपयोग करने वालों की सख्या में ९४ प्रतिशत की बढ़ोतरी, इंटरनेट पर हिंदी में १.२ लाक से अधिक विकीपीडिया पेज होना, माइक्रोब्लागिंग वेबसाइट ट्विटर के हिंदी संस्करण का जारी होना, इंटरनेट पर ६० हजार से अधिक ब्लॉगों द्वारा हिंदी में काम करना इत्यादि अग्रगति हिंदी मीडिया के भविष्य की ओर यही दर्शाती है कि हिंदी समाज का संघर्ष सही दिशा की ओर बढ़ रहा है। प्रौद्योगिकविद्दो का कहना है कि हिंदी समाज और हिंदी मीडिया का भविष्य उज्ज्वल है, इसलिए गूगल ने अंग्रेज़ी और जर्मन के बाद हिंदी में वर्चुअल असिस्टेंट एप जारी किया है। इन दिनों स्मार्ट मैसेजिंग एप के जरिये हिंदी का प्रचार-प्रसार काफी बढ़ा है। एप्पल के सिरी नामक वर्चुअल असिस्टेंट ने हिंदी को सुगम बनाने का प्रयास किया है। बढ़ती प्रौद्योगिक अग्रगति से ताल मिलाते हुए हिंदी मीडिया ने जिस तरह से अपना आधार मजबूत किया है, ठीक उसी तरह से इसने विचार की दुनिया में सत्य और नैतिकता को स्थापित करने का दृष्टांत तैयार किया है।

Scanned by CamScanner

हिंदी समाज और हिंदी मीडिया एक-दूसरे के संवाहक हैं। सहिष्णुता को मजबूती देने की दृष्टि से भी हिंदी मीडिया ने विभिन्न भाषाओं के मीडिया से ऊर्जा ग्रहण करने का प्रयास किया। इस सिलसिले में आश्चर्य तब होता है जब हिंदी मीडिया ने भारतीय सांस्कृतिक समन्वय की चर्चा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करते हुए यह उद्घोष किया कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनानी होगी। हिंदी मीडिया की इस मांग ने पूरे विश्व के भाषा प्रेमियों, जनतंत्र पसंदनो को अपनी ओर आकृष्ट किया तथा यह साबित किया कि किस तरह से एक भाषा का मीडिया अपनी भाषा को विश्व स्तर पर स्थापित करने का संघर्ष शुरू करता है, जो मीडिया सिर्फ हिंदी का मीडिया है। हिंदी मीडिया कभी भी किसी अन्य भाषा के मीडिया के प्रति असहिष्णु नहीं होता। जो अधिकार के लिए लड़ता है, उसी का नाम हिंदी मीडिया है, जो तीसरी दुनिया के देशों को अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य की शिक्षा देते हुए अधिकारी की रक्षा करने के साथ-साथ भुखमरी के विरुद्ध लड़ने, महंगाई को कम करने, शिक्षा को मौलिक अधिकारों के रूप में स्थापित करने, आर्थिक विषमता को कम करने, विश्व स्तर पर सहिष्णुता को प्रचारित-प्रसारित करने का संदेश देता है। महिलाओं के अधिकारों को वाणी देते हुए यह मीडिया यही कहता है कि स्त्री को आजाद करने तथा स्त्री को सम्मान देने के बिना यह दुनिया न चल सकती है और न बदल सकती है।

परिवर्तन के गीत को हिंदी मीडिया दुहराता नहीं है बल्कि परिवर्तन के सुफलों को गरीब के घरों तक पहुँचाने के लिए दृढ़ संकल्प होता है। यही वह पटरी है, जिस पर हिंदी समाज रूपी इंजन चलती है, जो सबको लेकर सबके लिए चलती है। हिंदी मीडिया के विचार को जो आत्मसात करता है, उसका भी विकास होता है। इसलिए कि हिंदी मीडिया वस्तुनिष्ठता को महत्त्व देता है। इस महत्त्व से ही समाज में परिवर्तन होने की बुनियाद तैयार होती है। इस बुनियाद की पहचान समाज ही निर्धारित करता है; यह तभी संभव होता है, जब उस समाज में खुद के मीडिया को विकसित करने की ताकत होती है। यही कारण है हिंदी मीडिया को कम विज्ञापन मिलता है, इसके बावजूद वह अन्य भाषाओं के मीडिया की अपेक्षा अधिक संघर्ष करता है। हिंदी मीडिया मैन पगार की चिंता नहीं करते, पावर की चिंता नहीं करते ौर पद की भी चिंता नहीं करते, यदि उन्हें चिंता है तो सिर्फ अपने समाज की, इसलिए कि समाज की भाषा हिंदी है, जिस भाषा में प्रेमचंद लिखते थे, जिस भाषा में भैरव प्रसाद गुप्त 'कहानी', 'नई कहानियां' जैसी साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन करते थे। वर्तमान इसी भाषा में सबसे अधिक दैनिक अखबार छपते हैं, इसी भाषा को सबसे अधिक साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक पत्रिकाओं को छापने का श्रेय है। इसलिए कि इस भाषा ने पूरी तरह से देश-दुनिया की गति को पहचानते हुए समय का सही मूल्यांकन किया है। यह मूल्यांकन समाज-सापेक्ष है और समय-सापेक्ष है। इस सापेक्षता ने हिंदी मीडिया को प्रतिबद्ध बनाया है। हिंदी मीडिया की प्रतिबद्धता ने परतंत्र भारत के विरुद्ध लड़ा है। स्वतंत्र भारत में मोहभंग, आपातकाल को देखा है तथा नव-वैश्वीकरण के युग की सारी विषमताओं का विरोध करते हुए इस 'उत्तर-सत्य' युग में शांति-सौहार्द्र-सहिष्णुता की रक्षा करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दुनिया के प्रति संबद्ध किया है। हिंदी मीडिया की बौद्धिकता हिंदी समाज की बुद्धिमत्ता है तथा हिंदी समाज की शक्ति हिंदी मीडिया की शक्तिमत्ता है। निष्कर्ष के तौर यह कहना उचित होगा कि सन् १९५० से लेकर सन् २०१७ की अवधि सच्चे अर्थों में हिंदी समाज की शक्तिमत्ता तथा हिंदी मीडिया की बुद्धिमत्ता की संघर्षगाधा की जय-ध्वनि है।

●●

Scanned by CamScanner